क्रियायोग अनुसन्धान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo.ca

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है

क्रम संख्या.....

दिनाँक.....

प्रकाशनार्थ

5 फरवरी, 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मोरी रोड पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

''क्रियायोग ध्यान से सभी धर्मग्रंथों में निहित एक सत्य की अनुभूति''

5 फरवरी 2013 इलाहाबाद । ''मानव अस्तित्व का दृश्य रूप जो पैर की अँगुली से सिर तक शरीर के रूप में प्रकट हो रहा है, को हस्तिनापुर कहा गया है । ''हस्तिनापुर'' शब्द में 'हस्त' का अभिप्राय हाथ तथा 'पुर' का अभिप्राय क्षेत्र से है । हाथ एक इन्द्रिय है । मनुष्य ज्ञान की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति हाथों के माध्यम् से करता है । सम्पूर्ण इन्द्रियों का क्षेत्र अर्थात् पुर जो पैर की अँगुली से सिर तक स्वरूप के रूप में प्रकट हो रहा है, को हस्तिनापुर कहा गया है । श्रीमद्भगवद्गीता अन्तःकरण का विज्ञान है । इसी को आत्मविज्ञान भी कहा गया है । श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित समस्त घटनाएँ, पात्र आदि साधक के द्वारा ईश्वरानुभूति के मार्ग में प्रकट होने वाली विभिन्न अवस्थाओं को व्यक्त करते हैं । मानव स्वरूप में समस्त दैवीय और आसुरी प्रवृत्तियॉ विद्यमान हैं जिन्हें महाभारत काल में कौरव और पाण्डव प्रवृत्तियों के रूप में वर्णित किया गया है । क्रियायोग ध्यान युद्ध का अभ्यास है जिससे साधक के अंदर की कौरव प्रवृत्ति का पाण्डव प्रवृत्ति में रूपान्तरण हो जाता है और तत्पश्चात् पाण्डव प्रवृत्ति का श्रीकृष्ण शक्ति अर्थात् परब्रह्म तत्व में विलय हो जाता है ।'' उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने मोरी रोड पर सेवारत क्रियायोग शिविर के पण्डाल में व्यक्त किया ।

महाभारत की शाब्दिक एवं तात्विक विवेचना करते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि महाभारत का अभिप्राय सामान्य रूप में लडाई–मारपीट आदि हिंसात्मक क्रिया से

क्रियायोग का विश्वव्यापी प्रसार एक ऐसे अखण्डित विश्व का सूत्रपात करेगा
जिसके शासक स्वयं परमचैतन्य परमात्मा होंगे ।

लगाया जाता है जो सही नहीं है । 'महाभारत' शब्द 'महा', 'भा' और 'रत' के संयोग से बना। 'महा' का अभिप्राय सबसे बडा, 'भा' का अभिप्राय ज्ञान तथा 'रत' का अभिप्राय युक्त होने से है। सबसे बडे ज्ञान से युक्त होने की क्रिया महाभारत है । सबसे बडा ज्ञान अमरता का ज्ञान है। महाभारत अमरता का विज्ञान है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने विस्तार से स्पष्ट किया कि सभी धर्मग्रंथों में एक ही सत्य का वर्णन है । सत्य अनुभूति को आत्मसाक्षात्कारी ऋषियों ने अलग–अलग स्वरूपों में व्यक्त किया है जिसे एक ओमकार सतनाम, शिवोहम्, अहंम ब्रह्मास्मि, तू ही तू मैं नाहि, क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के बीच दूरी शून्यता आदि के रूप में वर्णित किया गया है । उक्त सभी भाव एक ही सत्य की अनुभूति को व्यक्त करते हैं कि एक मात्र परब्रह्म का अस्तित्व है । परब्रह्म शक्ति दृश्य और अदृश्य जगत के रूप में प्रकाशित हो रही है । हम, आप, मैं तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड परब्रह्म शक्ति का अलौकिक प्रकाश है । कार्यक्रम के दौरान स्वामी जी ने श्रीमद्भगवद्गीता के तेरहवे अध्याय के प्रथम और द्वितीय श्लोक पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए क्रियायोग ध्यान का विधिवत अभ्यास कराया। स्वामी जी ने क्रियायोग प्रशिक्षण के दौरान आहार विज्ञान के वैज्ञानिक स्वरूप को एल0सी0डी0 प्रोजेक्टर के द्वारा विस्तारपूर्वक स्पष्ट किया ।

मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6 से 7 बजे तक, श्री श्री महावतार बाबा वटवृक्ष परिसर में प्रातः 6:30 बजे से 8 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:30 बजे से 9:30 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 5:30 बजे तक और रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अॅग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता